भासा के न बांटियो

आचार्य रामानन्द मंडल

मैथिली कविता संग्रह

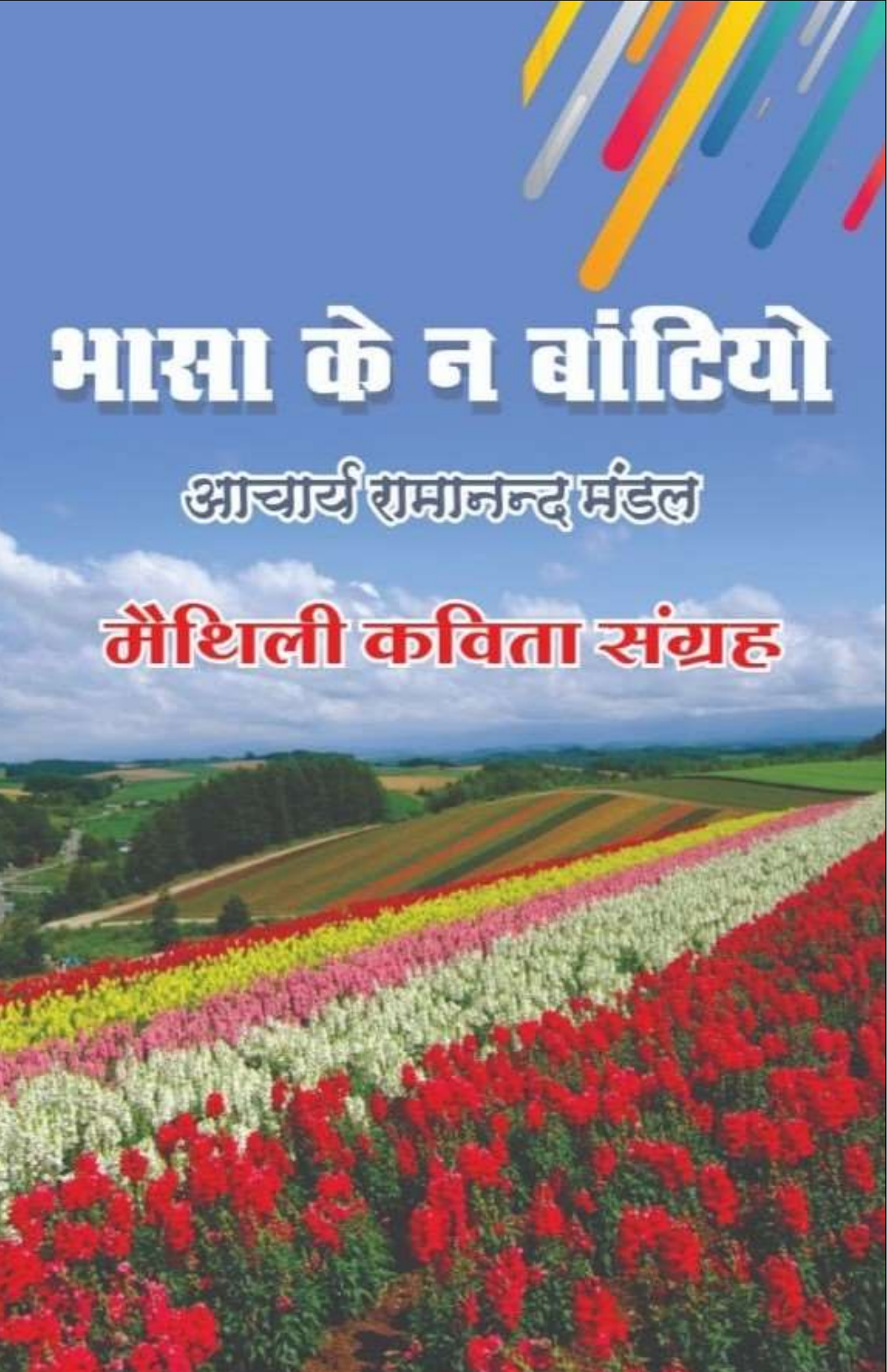

प्रेरणा के श्रोत बाबू जी

स्व. राजेश्वर मंडल के समर्पित

जन्म : १९३४ **देहांत :** १८.१२.२००५

भासा के न बांटियो

(मैथिली कविता संग्रह)

लेखक

आचार्य रामानंद मंडल

प्रकाशक

मिथिला समाज ट्रस्ट

ISBN : 978-81-955504-7-0

भासा के न बांटियो

(मैथिली कविता संग्रह)

लेखक : आचार्य रामानंद मंडल

© **लेखकाधीन**

पहिल संस्करण : २०२२ इ.

मूल्य : भारतीय १२५/- रुपया मात्र

आवरण : साभार

प्रकाशक :

मिथिला समाज ट्रस्ट

दिल्ली : द्वितीय तल, प्लाट संख्या - १२,

खेसरा संख्या - १२२/५/१, लालडोरा,

ब्रह्मकुमारी मार्ग, संत नगर, दिल्ली

पिन - ११००८४

मोबाइल : ९९११५६२८५९

Email : mithilasamajtrust@gmail.com

Website : www.mithilasamajtrust.com

मुद्रक : जैना ऑफसेट प्रिंटर्स, साहिबाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Bhasha Ke Na Bantiyo

A Collection of Maithili Poems

By Acharya Ramanand Mandal

First Edition : 2022, Price : Rs. 125/-

प्रकाशकीय

मिथिला समाज ट्रस्ट भारतीय भाखा-साहित्यक विकासक प्रति गंभीर अछि। विशेष कऽ मैथिलीक संवर्धन - संरक्षण केर बाट पर डेग उठौलक अछि। मैथिली भाखाक विभिन्न अंग उपांग यथा ~ शब्द, शब्दकोश, बोली, व्याकरण, साहित्य आदि पर शोध ओ अनुशंधानकेँ प्रेरित आ समर्थन दऽ रहल। संस्थागत स्तर पर शब्दकोशक निर्माण, प्रकाशन - पुनर्प्रकाशन, उपभाखा साहित्यक लेखन केँ प्रोत्साहित करबाक हेतु पुरस्कार आदि पर किछु काज बढ़ल अछि। बोली - उपबोलीऽक भाखा विज्ञान - भाखा दर्शन दृष्टिएँ शोध अध्ययनकेँ आमंत्रित आ यथासाध्य आर्थिक - नैतिक समर्थन आ प्रोत्साहन देबाक प्रयास कऽ रहल अछि।

साहित्य भाखा टाक नहि अपितु सभ्यता स्वर थीक। कालखंडक सामाजिक चिंतन, दर्शन आ इतिहास आदिक ऐना सेहो। तैं नब ओ प्राचीन साहित्यक शोध, संरक्षण, प्रकाशन, पुनर्प्रकाशन ट्रस्टक अभीष्ट अछि। कोनहुँ भाखाक भविष्य समाजक ओकर जनाधारेसँ जुड़ल रहैछ। विश्व भरि भाखाक लोप एकटा चिंता आ चिंतनक विषय बनल अछि, किंतु से होइछ कियैक? भाखाक संबंधमे विमर्शक काल लक्षण गप्प सबतरि होइछ मुदा कारक तत्वक विमर्श क्वचिदे। प्रायः तैं अन्यान्ये भाखा जेकाँ मैथिली सेहो विघटनक बाट पर अछि।

प्राथमिक स्तर पर शिक्षामे जाहि भाखाकेँ स्थान नहि भेटल छैक ताहि ठाम नेना - भुटका अन्यान्य भाखाक माध्यमे पढ़बा लेल बाध्य अछि, स्नेह जगतैक केना? आ जखन रोजगारोक अवसर नै रहतैक तऽ एहि जुगमे प्रयोजन की पढ़बाक? कहबी छै चाणक्ये कहि गेला 'अर्थकारी च विद्या'।

सबटा विपरीते स्थिति छैक एखन धरि मैथिलीक संग ताहि पर मानक केर अनावश्यक आग्रह। शिक्षा हेतु कोनहुँ भाखाक मानकीकरण आवश्यक भ सकैछ सेहो एक हदे तक। कारण मानक होबक अर्थ ई नहि जे शैलीक विकास नहि हो। मैथिलीमे मानकक भूत किछु बेसिये रहलैक अछि। जिनका माथ पर ई शुद्धताक भूत आरम्भे सँ रहलन्हि

मैथिलीक शिक्षाक लेल संघर्षक कोनो चिंता वा इतिहास नहि भेटैछ अपवाद छोड़ि।

हमर दृष्टियें साहित्यमे मानक एकटा हास्यास्पद प्रसंग थिक। साहित्य एकटा प्रवाह थिकैक आ से ओही शैलीमे निकसैत छैक जाहि वातावरण सँ व्यक्ति अबैत अछि, नेनापनसँ सुनैत आ गुनैत अछि।जँ माटि नहि अछोप तऽ माटिक शब्द केना, ओकरा बजनिहार केना? अपितु जतेक उपभाषा वा शैली वा बोली कोनहुँ भाषाक हेतैक ओ भाखा स्वाभाविक रुपसँ ओतेक समंगर।

प्रस्तुत पोथी मैथिलीक अपन आपमे एकटा विशिष्ट शैली थिक। ग्रीयर्सन द्वारा उल्लेखित पछिमी मैथिली आ संग-संग स्वराज आंदोलनक बिहाड़िमे मैथिलीक आँगनमे आयल किछु अपरिचित तत्व, मुदा सेहो आने विदेशज तत्व जेकाँ लगभग सौ बरखमे मैथिलक दांत तरमे दबा पिच्चा आब मिथिलेक रूप रंग धऽ मैथिली बनि गेल अछि।

एहि पोथीक संग मिथिला समाज प्रकाशनक एतबा धरि स्पष्ट करब अभीष्ट जे मैथिलीक मान केर अर्थ थिक हुनक साङ्गोपाङ्ग सम्मान, समस्त बोली आ शैलीक संग जेना कन्नड़, बांग्ला, पंजाबी आदि सबतरि होइत अछि। साहित्यक प्रवाहमे, मैथिली मानकक बन्हनसँ मुक्त भऽ अपन सब रुपमे वास करतीह। चाननक ठोप भऽ टा नहि, पंचतत्व सामने अस्तित्वक आधार बनि रहतीह।

आचार्य रामानंद मंडल जी अपन प्रथमे पोथी 'भासा के न बांटियो' माध्यमे नीक विमर्श ठाढ़ कैलन्हि अछि आ मा मैथिलीकेँ भाषिक समृद्धकेँ वर्तमान जुग मे व्यापकता देबामे सफल रहलाह अछि। रचनाकारकेँ अशेष शुभकामना।

निदेशक
मिथिला समाज ट्रस्ट प्रकाशन, दिल्ली

दू शब्द

प्रकाशित रचनाक दृष्टिसँ आचार्य रामानन्द मण्डल नव कवि छैथ, किए तँ पहिल जे प्रकाशित होइबला छैन, मुदा समाज आ साहित्यक जिज्ञासा नव छैन से नहियेँ कहल जा सकैए। साइंसक (विज्ञानक) विद्यार्थी, आचार्य रामानन्द मण्डल, एम.एस-सी. (रसायन शास्त्रसँ) छैथ, जे मिडिलो स्कूलमे विज्ञानेक अध्यापक रूपमे काज केलैन। दू हजार उन्नैस इस्वीमे सेवा निवृत्ति भेला अछि। सीतामढ़ी जिलाक वासी भेने मण्डलजीक रचनापर पच्छिमी भाषाक प्रभाव पड़ले छैन जइसँ शब्द विन्यासमे अन्तर आबिए गेल छैन। ओहुना अपनो ऐठाम माने मध्य मिथिला जेकरा बुझै छिऐ, तहूठाम 'बाबू यौ', 'बाबू हओ', 'बाउ हौ' आ 'बाउ गौ'क चलैन समाजमे अछिए।

मैथिली भाषा आ साहित्यकेँ एक जीवन भेटल, तँए खुशी छी। शुभकामनाक संग धन्यवाद।

जगदीश प्रसाद मण्डल

बेरमा, मधुबनी

06 अप्रैल 2022

भूमिका

जखन मैथिलीकें संविधानक अष्टम सूचीमे स्थान भेटलाक बादो विद्यालयमे मैथिली भाषा माध्यमे शिक्षा हेतु मैथिली-सेवी द्वारा संघर्ष चलि रहल अछि आ दोसर दिस मैथिलीक अन्य शैली यथा अंगिका,बज्जिका आदिकें एहि सँ फराक करबाक सरकारक षड्यंत्र देखबामे आबि रहल अछि ताहि मध्य आचार्य रामानंद मंडलजीक कविता संग्रह 'भासा के न बांटियो' प्रकाशित होयब निश्चितरूपेण एकटा महत्वपूर्ण आ प्रशंसनीय डेग अछि ।

आचार्य रामानंदजी वृतियें शिक्षक रहलाह अछि आ एकटा शिक्षक जीवन पर्यन्त समाजक नव निर्माणमे अहम् भूमिकाक निर्वाह करैत अछि ।अपन चारु कात होइत रहैत सामाजिक, धार्मिक आ राजनीतिक परिवर्तन आदि सँ अप्रभावित नहि रहि सकैत छथि आ फलस्वरूप हृदयक भाव, संवेदना, प्रतिक्रिया आदि प्रस्फुटित भ' कलमक धार संग बहय लगैत अछि आ तखन होइत अछि, कविताक संग्रह ।

'भासा के न बांटियो' पछिमा (बज्जिका) मैथिलीमे लिखल काव्य-संग्रह अछि आ ई ओहिना लिखल अछि जेना कि बाजल जाइछ । हिनक काव्य यात्रामे एकठाम भूमिजा सीताक वर्णन अछि जाहिमे लिखैत छथि :-

"निर्वासित भेल अवीर सीता, वीर सीता बनल अवीर सीता"

त' दोसर दिस स्त्री आ प्रेम-विषयक कविता 'माय', 'पत्नी', 'वो विधवा हइ', 'नारी तू के छे?', 'रुपवती' आदि सेहो अइ संग्रहमे अछि । तखन अबैत छथि सामाजिक परिवेशक चित्रण करबा लेल, वर्ण व्यवस्था सँ ल क, गिरहत-खबास, जाति व्यवस्था तक पर अपन मंतव्य रखैत छथि । मिथिला वर्णन जाहिमे सीता, सलहेस, दिनकर ,रेणु आदिक चर्चा केने छथि त' दोसर दिस मैथिली की थीक ताहू पर विस्तृत प्रकाश छन्हि । लोकतंत्रक वर्त्तमान स्थिति पर प्रहार करैत पंचायत राजक कुव्यवस्था पर सेहो लिखैत छथि । लालबहादुर शाष्त्री संग गांधीजी क' स्मरण करैत मिथिलाक स्वतंत्रता-

सेनानी, जाहिमे किछु नाम प्राय: कम लोक जनैत अछि, रामफल मंडलक चर्चा करैत छथि ।

एक ठाम झाझा मेलक व्यंगात्मक चित्रण अछि त' दोसर दिस विद्यापति आ अयाची क' महिमा वर्णन सेहो करैत छथि । मिथिलाक पाबनि छठिक महिमा वर्णन करैत एहि वैज्ञानिक युगमे अंधविश्वासक कारणे बेछप होइत 'भक्तै' पर सेहो कलम उठबैत छथि । दधीचिक अस्थि-दानक महत्ता के दर्शाबैत आजुक विनयात्मक दानपर सेहो छोड़ैत नहि छथि ।

एहि पोथीक शीर्षक रचना 'भासा के न बांटियो' आ 'अंगिका बज्जिका' शीर्षक कवितामे मातृभाषा मैथिलीक प्रति गंभीर आ फरिछ भाव मुखरित भेल । आरो बहुत रास बातक परिचर्चा कविताक माध्यमे केने छथि । एके भाव के केन्द्रमे राखि भिन्न भिन्न शब्द विन्यास करैत अनेको शीर्षक सँ लिखने छथि । 'मिथिला राज बना दा' नीतिरहित अवसरवादी राज्यक मांग केनिहार पर कसगर प्रहार अछि। 'मिथिला हमर महान हो' मे कवि लिखैत छथि -

आरक्षण रिपोर्ट महान हो, मिथिला हमर महान हो ।

जहाँ तक जातिवाद / वर्णवादक गप्प अछि ओ पछिला ३० बरखक तुलना आब सार्वजनिक जीवनमे नहिये जकाँ अछि आ जा आरक्षण रहतै जातिक चर्च होइते रहतैक सेहो सत्य छै ।

कविक आयु सृजनात्मक गतिविधिये सँ निर्धारित होबक चाही । ८७ गोट रचनामे विषयक वैविध्यक संग जँ किछु भावात्मक द्वंदो दृष्टिगत होइछ त' से निस्संदेह स्वभाविके । संक्षेपमे कही त' ई पोथी मिथिलाक विभिन्न आयाम के समटैत देशी भाषाशैलीक एकटा खास भाव के केन्द्रमे राखि प्रकाशित कविता संग्रह अछि । मैथिली साहित्यक पटल पर शुभकामनाक संग कविक स्वागत छन्हि ।

धीरेन्द्र कुमार झा "धीरू"
हैदराबाद

अप्पन बात

अप्पन मैथिली कविता संग्रह – 'भासा के न बांटियो', साहित्यानुरागी सभ के हाथ मे देवे के लेल मन प्रफुल्लित होय हैय। सरकारी सेवा मे रहिते साहित्य के क्षेत्र मे काज करे के लेल ज्येष्ठ पुत्र प्रो (डॉ) राजीव रंजन कहे लगलन। हम हिन्दी मे उपन्यास लिखे लगली जे पांडुलिपि के शोभा बढ़ा रहल हैय।

31 दिसम्बर 2019 के सरकारी सेवा (प्रधानाध्यापक) से सेवा निवृत्ति के बाद सोशल मीडिया पर ज्यादा समय बिताबे लगली। सोशल मीडिया पर मिथिला, मैथिल आ जनगणना मे अप्पन मातृभाषा मैथिली लिखाउ ध्यान आकृष्ट कइलक। वोइ क्रम मे कामेन्ट वाक्स मे सवाल-जबाब होय लागल। मिथिला के संगे मैथिली के भाषा विवाद भी मन उद्वेलित करए लागल। जौं मिथिला के संस्कृति मे बाभन आ सोलकन के विषमता त' दूसर मानक मैथिली, दक्षिणी मैथिली (अंगिका) आ पश्चिमी मैथिली (बज्जिका) के विवाद ब्यथित करए लागल। अइ क्रम मे फेसबुक मित्र के रूप मे किशन कारीगर, रामनरेश यादव, रामकृष्ण परार्थी, दिनेश यादव (नेपाल), संतोष तिरहुतिया, श्रीहर्ष आचार्य ,कवि राजीव एकांत, मलय मिश्र, डॉ उमेश मंडल आ किसलय कृष्ण जैसन हृदयग्राही मित्र मिलल। जिनकर प्रोत्साहन स' साहित्य के क्षेत्र मे आबे मे सहायक बनल।

समय पाय के मिथिला, मैथिल आ मैथिली मन के झकझोरए लागल। मन मे अंहर उठए लागल कि केना मिथिला अक्षुण्ण रहत। अयला की मिथिला जतने अनकर हैय ओतने हमरओ हैय। मैथिली जतने दरभङ्गा आ की मधुबनी के लोग के हैय ओतने सीतामढ़ी के लोगओ कए छेबे करई। केना मिथिला के बाभन आ सोलकन केवल आ केवल मैथिल रहत। केना मानक, बज्जिका आ अंगिका मैथिली रहत। हम जे बाजै छी वो हमर मातृभाषा हैय। हम मिथिला के वासी, हम सभ मैथिल छी। मिथिला के सब बोली मैथिली हैय। अइ क्रम मे भाव हृदय से कविता बन के निकलए लागल। वो कविता वेदना, आक्रोश आ व्यंग के रुप मे देखाई देवे लागल।

मिथिला, मैथिल आ मैथिली के अलावा ईश्वर,मानव, धर्म, राम सीता, नारी, ब्राह्मण , बाबू, माय, समाज आ देश भी कविता मे समावे लागल। सामाजिक विषमता आ मानवीय संवेदना कविता के कथ्य आ शिल्प बने लागल। हिरदय के भाव कविता बन के बहए लागल । आइ वो कविता संग्रह "भासा के न बांटियो" के रूप मे अहां लोगन के समक्ष प्रस्तुत हैय। एकरा पढू आ समीक्षा करू आ अप्पन विचार के विभिन्न मंच से प्रस्तुत करू।

अइ कविता संग्रह के प्रकाशन के लेल पत्नी प्रमिला देवी, ज्येष्ठ पुत्र राजीव रंजन बहु स्वाति परवाल, मंझला पुत्र रवि रंजन, बहु नेहा भलोटिया, संझला पुत्र प्रभात रंजन और छोट पुत्र प्रभाष रंजन संगे समस्त परिवार के अहम योगदान हैय। कविता संग्रह – 'भासा के न बांटियो' के प्रकाशन मे मिथिला समाज ट्रस्ट, प्रकाशन के निदेशक आ मिथिला - मैथिली के अभियानी कवि एकांत राजीव झा के अमूल्य योगदान हैय। अइ लेल सभ लोग के सादर आभार।

संक्षिप्त नाम रामा से लिखल कविता संग्रह के बाबू जी स्व ० राजेश्वर मंडल के चरण कमल मे अर्पित करइत छी।

- आचार्य रामानंद मंडल
मुरलियाचक वार्ड-04सीतामढी।
मो-9973641075
ईमेल- ramanandmandal001@gmail.com

कविताक्रम

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ
१.	जीवन के रनछेत्र मे	०३
२.	इतिहास हम पढ़बई	०४
३.	हम कबीर बनबई	०५
४.	समाधान के बाट	०६
५.	मैथिली साहित	०७
६.	घोघाउज	०८
७.	रार छिरल	०९
८.	अंगिका बज्जिका	१०
९.	भासा के न बांटियो	११
१०.	की छियई मैथिली	१२
११.	कोइली के बोली	१३
१२.	शास्त्रार्थ नइ भावार्थ	१३
१३.	बाबू	१४
१४.	माय	१५
१५.	बेटा आ बेटी	१६
१६.	बेटी!	१७
१७.	पत्नी	१८
१८.	रुपवती	१८
१९.	संबंध आ बोध	२०
२०.	उंटा विचार	२२
२१.	राम के छइ	२३
२२.	बुद्ध	२४
२३.	सीता आ राम	२५
२४.	अवीर सीता	२६
२५.	भूमिजा सीता	२७.
२६.	वीर लोरिक	२९.
२७.	बराम्हन ! की छइ?	३०
२८.	हो बाबा गांधी	३१.
२९.	लाल बहादुर शास्त्री	३२.
३०.	शहीद रामफल मंडल	३३.
३१.	मिथिला	३४.
३२.	मिथिला महातम	३५.
३३.	मिथिला मे की छइ	३७
३४.	मिथिला हमर महान	३९
३५.	मिथिला राज्य हमर महान	४१
३६.	मिथिला राज	४३
३७.	मिथिला राज बना दा	४५
३८.	बियाकुल मोरा जियरा	४६
३९.	हम्मर सुनू	४६
४०	नायक छी हम	४७
४१.	हम मिथिला छी	४८
४२.	मिथिला कएं संसकृति	५०
४३.	मैथिल सभा	५२
४४.	अधलाह संसकृति	५३

कविताक्रम

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ
४५.	भगवान के जाति	५४
४६.	अप्पन राज चाही	५५
४७.	धुत्त बुड़बक	५५
४८.	जातीय बोध	५६
४९.	झाझा मेल	५८
५०.	अहा ! आह !	५९
५१.	मनु आ द्रोन	६०.
५२.	जातिवाद	६१.
५३.	दरद	६२.
५४.	समाज भइल निसपरान	६३.
५५.	दान	६४.
५६.	कएरैक्टर ढ़ीला	६५
५७.	भक्तन के पहरा	६६.
५८.	धरम - १	६७.
५७.	धरम	६८.
६०.	धरमी	६९.
६१.	हिन्दू	७०
६२.	मनुस बंटल	७१
६३.	झकझोरइय हैय	७२
६४.	कोयल आ काग	७३
६५.	इ धरती छई	७४
६६.	हो मैथिल	७५
६७.	हो बाबा	७७
६८.	गुलाम	७८
६९.	खवास	७९
७०.	केवल मानव	८०
७१.	विधवा	८१
७२.	नारी तू के छे?	८२
७३.	दुसमन	८३
७४.	नियाय रछक	८४
७५.	बीतल बरस	८५
७६.	नब बरस	८६
७७.	मन उलबुलाइल	८७
७८.	पंचायत चुनाव	८८
७९.	राज करई छी	८९
८०.	भकतै	९०
८१.	असहमति	९२
८२.	मेघ	९३
८३.	कमाल के हैय	९४
८४.	छठ	९५
८५.	छठ परब	९७
८६.	झिझिया	९८
८७.	परकास परब	९९

१. || जीवन के रनछेत्र मे ||

तन रथ छइ !
मन घोड़ा छइ !
बुदधी लगाम छइ।
जीवन के रनछेत्र मे।

रथ टूटल छइ !
घोड़ा तेज छइ!
लगाम ठीक छइ!
जीवन कएं रनछेत्र मे।

तेज घोड़ा रहितओ!
लगाम ठीक रहितओ!
टूटल पहियो रहितओ!
रथ केना पहूंचतओ !
जीवन के रनछेत्र मे।

रथ पर लादल छइ,
परिवार के बोझ!
लादल छइ सामाजिक बोझ!
लादल छइ देस के हित के बोझ!
रथ केना पहूंचतइ लछय बोझ!
जीवन के रनछेत्र मे।

रामा केवल जीजीविशा पहूंचतइ।
जीवन के रनछेत्र मे।

■■■

२. || इतिहास हम पढ़बई ||

इतिहास हम पढ़बई,
हम इतिहास समझबई।
इतिहास हम लिखबई,
हम इतिहास बनईबई।

इतिहास मे पुरखा खोजबई,
नायक इतिहास मे ढूंढबई ।
इतिहास मे खलनायक खोजबई,
नया इतिहास बनईबई।

इतिहास मे उतसओ खोजबई,
राजनीति इतिहास मे ढूंढबई।
इतिहास मे समाजनीति खोजबई,
धरमनीति इतिहास मे ढूंढबई।

इतिहास से सबक सीखबइ,
गियान इतिहास से बढ़ईबई।
इतिहास मे मान बढ़बई,
रामा मरम इतिहास के समझबई।

■■■

३. || हम कबीर बनबई ||

हमरा रोकए टोकए मत कोइ,
हम त कविता लिखबई।

हमरा रोकए टोकए मत कोइ,
हम त खिस्सा लिखबई।

हमरा रोकए टोकए मत कोइ,
हम त शब्द के तोड़बई।

हमरा रोकए टोकए मत कोइ,
हम त भासा के मरोड़बई।

हमरा रोकए टोकए मत कोइ,
हम त सरहद तोड़बई।

हमरा रोकए टोकए मत कोइ,
हम शब्द भासा के मालिक बनबई।

हमरा रोकए टोकए मत कोइ,
हम त लोकक पीड़ा लिखबई।

हमरा रोकए टोकए मत कोइ,
रामा हम कबीर बनबई।

■■■

४. || समाधान के बाट ||

बिरोधी नइ,
सचेतक छी हम।
बंचित समाज के,
आवाज छी हम।
बिरोधी नइ,
मूक समाज के,
कराह छी हम।
बिरोधी नइ,
हासिया के लोग के,
मांग छी हम।
बिरोधी नइ,
उपेछित लोग के,
आश छी हम।
बिरोधी नइ,
दलित लोग के,
असहमति के आवाज छी हम।
रामा असहमति दुसमनी नइ,
समाधन के बाट छी हम ।

■■■

५. || मैथिली साहित ||

मैथिली साहित मे !
कथ्य आ शिल्प हैय,
देओ आ दानव हैय।

मैथिली साहित मे !
दरसन आ मरदन हैय ,
आदर आ अनादर हैय।

मैथिली साहित मे !
राजा आ रानी हैय ,
कविता आ कहानी हैय।

मैथिली साहित मे !
महानता आ अमानवता हैय,
परसंसा आ निंदा हैय।

मैथिली साहित मे !
परेम आ घिरना हैय ,
रामा मैथिल आ अमैथिल हैय।

■■■

६. || **घोघाउज** ||

मिथिला मे घोघाउज हो रहल हइ,
मैथिली बज्जिका मे घोघाउज हो रहल हइ ।१।
मैथिली अंगिका मे फरिछऔल हो रहल हइ,
मिथिला मे मैथिली के मानक आ रार मानत हइ ।२।
मिथिला मे बात के लड़ाई हो रहल हइ,
मिथिला के शान के बात हो रहल हइ।३।
मिथिला मे अंग बज्जि के अपमान हो रहल हइ,
मिथिला मे देओता के मान हो रहल हइ।४।
मिथिला मे मानवता के अपमान हो रहल हइ,
मिथिला मे जातिवाद के राज बनल हइ।५।
मिथिला मे मनु के संविधान चाहइ हइ,
मिथिला मे भारतीय संविधान के जातिवाद के खान कहइ हइ ।६।
मिथिला मे दरभंगा राज के राज चाहइ हइ,
मिथिला मे मैथिल के बाभन सोलकन कहइ हइ ।७।
मिथिला मे मैथिल के छूत अछूत मानइ हइ,
मिथिला मे मैथिल के छोटका-बड़का जाति कहइ हइ ।८।
मिथिला मे मैथिल के रौ-यौ कहइ हइ,
मिथिला मे रामा मैथिली लेल घोघाउज हो रहल हइ ।९।

■■■

७. || रार छिरल ||

मिथिला मे रार छिरल।
मैथिली मे रार छिरल।

अंगिका लेल रार छिरल।
बज्जिका लेल रार छिरल।

बोली लेल रार छिरल।
कोड लेल रार छिरल।

जनगनना लेल रार छिरल।
मातरीभासा लेल रार छिरल।

बज्जिका के रार कहल।
अंगिका के रार कहल।

मानक- शैली मे रार छिरल।
भासा- बोली मे रार छिरल।

बज्जिका मैथिली के अंग कहल।
रामा अंगिका मैथिली के अंग कहल।

■■■

८. || अंगिका बज्जिका ||

अंगिका बज्जिका मैथिली से
हो गेल गायब।

मिठगर बोली मैथिली के
हो गेल गायब।

अंगिका आदि कवि रहे
सरहपा भे गेल गायब।

बज्जिका आदि कवि रहे
गयाधर भे गेल गायब।

मैथिली बोली जनगनना मे
हो गेल गायब।

मानक देलक मैथिली के
बोली के गायब।

भासा राजनीतिक तीर से
मैथिली हो गेल घायल।

कालिदास बनल मैथिली के
विद्वान काटइत बइठल डालक।

संबरधन लेल मैथिली के
रामा बोली के बलबरधन।

■■■

९. || **भासा के न बांटियो** ||

भासा के,
सरहद मे न बांटियो।
मैथिली के,
बज्जिका अंगिका मे न बांटियो।

मैथिली के,
संसकृत -असंसकृत मे न बांटियो।
मैथिली के,
रार मानक मे न बांटियो।

मैथिल के,
ऊँच-नीच मे न बांटियो।
मैथिल के,
बाभन सोलकन मे न बांटियो।
मैथिल के,
छूत अछूत मे न बांटियो।

मिथिला के,
बज्जिकांचल अंगिकांचल मे न बांटियो।
भासा के,
रामा सरहद मे न बांटियो।

■■■

१०. || की छियई मैथिली ||

की छियई मैथिली!
हम सुनई छियई मैथिली,
हम बोलई छियई मैथिली।
हम पढई छियई मैथिली,
हम लिखै छियई मैथिली।

कि हइ मैथिली!
हम सुनई हइ पछिमी मैथिली।
हम बोलई हइ पछिमी मैथिली,
हम पढई हइ पछिमी मैथिली।
हम लिखई हइ पछिमी मैथिली,

कि छई मैथिली!
हम सुनई छइ दछिनी मैथिली,
हम बोलई छइ दछिनी मैथिली।
हम पढई छइ दक्षिन मैथिली,
हम लिखई छइ दछिनी मैथिली।

की छियई! की हइ! की छइ! मैथिली!
हम सभ छियई! हइ! छियै ! मैथिली!
रामा पश्चमी दछिनी सभ छियई मैथिली!

■■■

११. || कोइली के बोली ||

कोइली के बोली माहूर लागे।
मानक मैथिली जहर लागे
मैथिली मछरी के बोर लागे।
अब मैथिली बोली तीत लागे
कोइली के बोली माहूर लागे।
बज्जिका के उपेछा तीर मारे
अंगिका के बैयजती शूल लागे।
मिथिला के माटी बेजान लागे
रामा कोइली बोली माहूर लागे।

■■■

१२. || शास्त्रार्थ नइ भावार्थ ||

हम शास्त्रार्थ नइ भावार्थ बुझई छी।
हम सीता मइया नइ बहिना बुझई छी।
हम शास्त्रार्थ नइ भावार्थ बुझई छी।
हम मिथिला राज नइ माइट बुझई छी।
हम शास्त्रार्थ नइ भावार्थ बुझई छी।
हम बज्जिका अंगिका नइ स्थान खोजई छी।
हम शास्त्रार्थ नइ भावार्थ बुझई छी।
हम बाभन सोलकन नइ सनमान खोजई छी।
हम शास्त्रार्थ नइ भावार्थ बुझई छी।
हम शब्दार्थ नइ रामा भावार्थ कहई छी।
हम शास्त्रार्थ नइ भावार्थ बुझई छी।

■■■

१३. ॥ बाबू ॥

बाबू याद आबइ छी!
पता नइ कहां छी?
परंच पास लगइ छी!

डांट याद आबइ छी।
आइ कोनो नइ डांटइ छी?
बाबू याद आबइ छी!

मनुहार याद आबइ छी!
आइ कोनो नइ मनुहारइ छी?
बाबू याद आबइ छी!

दुलार याद आबइ छी!
आइ कोनो नइ दुलारइ छी?
बाबू याद आबइ छी!

तियाग याद आबइ छी!
आइ कोनो नइ तियागइ छी?
बाबू याद आबइ छी!

बिंबक प्रतिबिंब बनल छी!
अचेतन सं चेतन बनल छी!
रामा मनुख बनल छी!

■■■

१४. || माय ||

माय
माय तोहर परेम
परेम पीड़ बनइत हइ।

माय
माय तोहर परेम
परेम सपना बनइत हइ।

माय
माय तोहर परेम
परेम आंसू बनइत हइ।

माय
माय तोहर परेम
परेम भय बनइत हइ।

माय
माय तोहर परेम
परेम मुक्त करइत हइ।

माय
माय तोहर परेम
परेम चान तारो मे दिखइत हइ।

माय
माय तोहर परेम
रामा परेम सपना मे दिखइत हइ।

१५. || बेटा आ बेटी ||

बेटा हमर,
आ बेटी तोहर।
हमरा बेटा भेल अइछ ।
नइ इ बेटा हमर ।
हमरा बेटी भेल अइछ ।
हं इ बेटी तोहर ।
नइ बात हम मानब ।
डागडर चलूं फरिछाइब ।
बाप मे एक्स -वाइ क्रोमोजोम।
माइ मे कएं एक्स क्रोमोजोम।।
एक्स एक्स सं बेटी,
आ एक्स वाइ सं बेटा।
हम दूनू के परेम मिलन सं,
परेम फलन अइछ बेटी-बेटा।
रामा इ कारन अइछ रसायना ।

■■■

१६. || बेटी! ||

काल्ही बेटी नइहिरए मे रहितए रहए,
अइला के बुढ़वा वर से बिआहल रहए।
नईहिरा मे धिया पुता होइत रहए,
गरीब बुढ़वा वर आवईत जाइत रहए।
गरीब बुढ़वा वर कुलिन जे रहए,
बुढ़वा वर के पांचम बिआह जे रहए।
बुढ़वा वर सभ सासुर जायत जे रहए,
नाती नतिनी के नाना नानी पोसत रहए।
नाना नानी कुलिन जमींदार जे रहए,

बेटी!

आई बेटी के बिआह गांव मे कइलए हैय,
दामाद कमाय लेल, गइल अरब हैय।
बेटा बेटी पढाई लेल, बेटी शहर आइल हैय,
माइ बाप शहर मे बसइत हैय।
बेटी, बाप के शहर मे भाड़ा के घर मे हैय,
बाप घर, भाई भौजाई के हो गइल हैय।
बेटी, बेटी न, पराई भे गइल हैय,
नाती नतिनी से नाना नानी मिलइत हैय।
रामा नाना नानी के, न घर जे हैय।

■■■

१७. || पत्नी ||

पत्नी
घर मे घरनी हैय,
बाहर मे प्रेयसी हैय।

पत्नी
दुख मे सहभागिनी हैय,
सुख मे सहगामिनी हैय।

पत्नी
परिवार के धूरी हैय,
पति के नूरी हैय।

पत्नी
धरम मे अरधांगनी हैय,
अंग मे वामांगी हैय।

पत्नी
कार्य मे मंत्रीनी हैय,
बीमारी मे मतारी हैय।

पत्नी
पत्नीए संजीवनी हैय,
रामा पत्नी जिनगी हैय।

■■■

१८. || रुपवती ||

रुपवती
रुपवती तोहर रुप
बेमिसाल छउ।
रुपवती तोहर मुखरा
पूनम चान छउ।
रुपवती तोहर केश
कारी नागिन छउ।
रुपवती तोहर भौं
तीर कमान छउ।
रुपवती तोहर आंख
खंजन के आंख छउ।
रुपवती तोहर नाक
सुग्गाक चोंच छउ।
रुपवती तोहर दांत
अनार के दाना छउ।
रुपवती तोहर जौवन
इलाहाबादी लताम छउ।
रुपवती तोहर मेरू
सिंह समान छउ।
रुपवती तोहर पांव
गुलाब के पंखुरी छउ।
रुपवती तोहर चाल
हिरनी के चाल छउ।
रुपवतीक रुप पर
रामा निहाल छउ।

■■■

१९. || संबंध आ बोध ||

बड़ बहिन माय सम मानू।
छोट बहिन बेटी सम मानू।१।

बड़ भाई बाबू सम मानू।
छोट भाई पूत सम मानू।२।

काका- फुफा पिता सम मानू।
काकी- फुआ माय सम मानू।३।

मामा- मउसा पिता सम मानू।
मामी- मउसी माय सम मानू।४।

ससुर कएं पिता सम मानू।
सास कएं माय सम मानू।५।

बहनोई कएं राम सम मानू।
बहिन कएं सीता सम मानू।६।

भाभी के माय सम मानू।
भावज के धीया सम मानू।७।

साला के भाई सम मानू।
साली के बहिन सम मानू।८।

दामाद कएं पूत सम मानू।

पुतोहु कएं धीया सम मानू।९।

पति कएं परमातमा सम मानू।
पतनी कएं अतमा सम मानू।१०।

पिता कएं भगवान सम मानू।
माय कएं भगवती सम मानू।११।

सामाजिक संबंध परेम सूत्र मानू।
रामा परेम कएं संबंध बनाइ राखू।१२।

■■■

२०. || उंटा विचार ||

उंटा विचार करइत छइ ।
कथित संत करइत छइ ।।

पति गुरु होइ छइ ।
गुरु पतियो होइ छइ ।।

किसन गुरु अवतारी छइ ।
गुरु किसन अवतारी छइ।।

बरहम जानकार बराम्हन छइ ।
बराम्हन बरहम जानकार छइ ।।

बरहम मनुस अवतार छइ ।
मनुस बरहम अवतार छइ ।।

मनुस बरहम कहाबइ छइ ।
रामा बरहम मनुस कहाबइ छइ ।।

■■■

२१. || राम के छइ ||

राम !

राम के छइ !

राम करुना छइ ! हे राम!

राम आकरोस छइ । जय श्री राम!

राम के छइ!

राम सनमान छइ! राम राम!

राम अपमान छइ! राम !राम!

राम के छइ!

राम ब्रहम छइ!

राम परम ब्रहम छइ!

राम के छइ!

राम सगुन छइ! तुलसी के राम!

राम निरगुन छइ ? कबीर के राम!

राम के छइ!

राम अजोध्यावासी छइ!

राम घट घट वासी छइ!

राम के छइ!

जानकी राम अपमानित छइ!

राम जानकी पूजित छइ!

राम के छइ!

राम नाम सत्य छइ!

राम नाम सतनाम छइ!

राम के छइ!

राम देओ छइ!

राम मानव छइ!

राम के छइ!

रामा अपने -अपने राम छइ!! ■■■

२२. ॥ बुद्ध ॥

बुद्ध मिथिला के रहइ,
लुम्बीनी मिथिला मे रहइ,
गियान आइ के बिहार मे पायल रहइ,
तहिया आइ के बिहार न रहइ।

बुद्ध के गियान दुनिया मे फइलल रहइ,
मिथिला बुद्ध के गियान से अंजान रहइ,
मगध के बुद्ध कहिके मिथिला सनातन रहइ,
अपना बुद्ध के न पहचान के मिथिला अभागल रहइ।

बुद्ध के दुनिया मानइत रहइ,
बुद्ध के मिथिला भगावइत रहइ,
बुद्ध मिथिला मे गियान बांटइत रहइ,
बुद्ध के वैशाली स्थापित करइत रहइ।

मिथिला मे बुद्ध के गियान बढइत रहइ,
मिथिला मे मानवता मानइत रहइ,
मिथिला मे शांति बनइल रहइ,
मिथिला रामा विकास करइत रहइ।

■■■

२३. || सीता आ राम ||

मैथिल के सीता आ राम ।
बहिन सीता आ बहनोई राम ।।

जगत के सीता आ राम ।
पतनी सीता आ पति राम।।

ब्रह्मांड के सीता आ राम ।
अतमा सीता आ परमातमा राम ।।

आदमी के सीता आ राम ।
अतमा सीता आ परमातमा राम ।।

धरती के सीता आ राम ।
मनुसता के सीता आ राम ।।

सगुन के सीता आ राम ।
निरगुन के सीता आ राम ।।

मानव के सीता आ राम ।
रामा अपने अपने सीता राम ।।

■■■

२४. || अवीर सीता ||

हम भूमिजा सीता,
बनलहुं जानकी सीता।
जनकनंदिनी सीता,
राम दुलारी सीता।
मैथिली सीता,
सीता गुमनाम सीता।
हम रही वीर सीता,
वाये हाथ उठइली धनु सीता।
रचल सुअमबर लेल सीता,
भेलहुं राम संग सीता।
वीर राम संग वीर सीता,
सीताराम से राम जानकी सीता।
लक्ष्मन करइ रखवारि वीर सीता,
केना रावन लड़े अवीर सीता।
सतीत्व परीछा दे अवीर सीता,
निर्वासित भेल अवीर सीता।
वीर सीता बनल अवीर सीता,
आइओ दागल जाइ अ सीता।
रामा आइओ बनय अवीर सीता।

■■■

२५. || भूमिजा सीता ||

रिसि मुनिक कर रक्ता।
रिसि मुनिक रंज शापा।
मुक्ति लेल पापी अधरमा।
सीता बनल भूमिजा सीता।
जनक गोद लेलन भूमिजा।
जानकी बनल देवी सीता।
सुअमबर भइल जनकपुरी।
सीता भइलन रामदुलारी।
राज सुख नइ भेटल सीतारामा।
परकीरति सुख भेटल सीयारामा।
लछुमन चाकर बनइ सियरामा।
रिसि गियान दियइ लखनरामा।

रावन हर लेलन जानकी।
रावन बन गेलन पातकी।
राम शपथ लेलन जानकी।
करब बध रावन पातकी।
राम वियोग मे तपलन सीता।
बनल आदर्स तपसनी सीता।
सीता वियोग मे तपलन रामा।
बनल पुरुसोतम तपस्वी रामा।
हनुमान सुगरीव देलन सहयोग।

रावन बध कइलन रामा।
सीता दइलन अगिन परीछा।
सफल भइल सीता परीछा।
जनता मांग बहिसकृत सीता।
वन मे गइलन दुबारा सीता।
बालमिकी अनुगरह पाइल सीता।
लव कुश पूत पाइल सीता।
पुनि परीछा देइ सीता।
धरती मे समाइल सीता।
बड़ दु:ख पाइल सीता।
रामा केतए दइत परीछा सीता।

■■■

२६. || वीर लोरिक ||

वीर लोरिक के लोरिकायन गाथा हैय।
संसकृति के दोसर जदुवंशी कृसना हैय।

पिता कठियत माय खुइलनक बेटा हैय ।
वीर संवुरनक छोट, वीर भ्राता हैय।

गुरु अजइ धोबी मित्र नाई गंगीया हैय।
सवारी लेल शरारती घोड़ा मंगरा हैय।

जदुवंशी लोरिक गायके पालक हैय।
गायक दूध पीके बनल पहलवान हैय।

दुरगा वीर लोरिक के अराधय हैय।
दुरगा पंख सवार देओ मिलत हैय।

बड़ - बड़ जोद्धा रनछेत्र हराबइ हैय।
मरदमल कोरइया बघेल निरमल हराबइ हैय।

पतनी मंजरी तेलीन परेमिका चनमा परेम करइत हैय।
अंयै अतियाचार के विरुध लड़इत हैय।

परेमिका इज्जत लेल बंठा चमार मारइत हैय।
हरेवा - परेवा हरा, सर्वजेता बनइत हैय।

वीर लोरिक जाति न मानइत हैय।
रामा लोरिक मिथिला करमछेत्र बनाबइत हैय।

■■■

२७. || बराम्हन ! की छइ? ||

बराम्हन ! की छइ?

शब्द छइ! ब्रहम छइ! बरम्हा छइ!

बराम्हन की छइ?

संत छइ! ऋषि छइ! महिर्सी छइ!

बराम्हन की छइ?

पुजारी छइ! पुरोहित छइ! मंत्री छइ!

बराम्हन की छइ?

शिछक छइ!आचार्य छइ ! गुरु छइ !

बराम्हन की छइ?

वेद छइ!भेद छइ! अभेद छइ!

बराम्हन की छइ?

शास्त्र छइ!शस्त्र छइ! धरम छइ!

बराम्हन की छइ?

देओ छइ! दानओ छइ! राछस छइ?

बराम्हन की छइ?

वरन छइ!जाति छइ! वरग छइ!

बराम्हन की छइ?

गरब छइ!विमर्श छइ! भरम छइ!

बराम्हन की छइ?

कि मानव छइ? मात्र मानव छइ।

रामा मानव छइ ।

■■■

२८. || हो बाबा गांधी ||

हो बाबा गांधी!
कहिओ तू राम रहअ !
आइ तू रावन भए गेलअ !१!
हो बाबा गांधी!
आइ गोडसे राम भए गेलअ !
तू बाबा रावन हो गेलअ !२!
हो बाबा गांधी!
तू महानायक रहा!
आइ तू खलनायक भए गेलअ!३!
हो बाबा गांधी!
आइ गांधी मूरती तोड़ल गेलअ!
गोडसे मूरती लगायल गेलअ !४!
हो बाबा गांधी!
कहीं कहीं बाबा पूजल गेलअ!
परंच तोहर बिचार तोडल गेलअ !५!
हो बाबा गांधी!
तोहर अहिंसा बेकार हो गेलअ!
धरम हिंसा जायज हो गेलअ !६!
हो बाबा गांधी!
देसक हाल देखि के रूआंसा हो गेलअ!
रामा राजनीति के खेला हो गेलअ!
हो बाबा गांधी।

■■■

२९. || लाल बहादुर शास्त्री ||

देस के लाल,लाल बहादुर शास्त्री,
जय जवान जय किसान के नारा देलन।
जीत लेलन पाकिस्तान,
समझऊता ले लेलक परान।
गांधी के आदर्स पर चललन,
नोछावर क देलन जीवन।
आइ जवान पर उठवइत प्रसनचिनह ?
किसान करइत हइ आंदोलन।
सरकार सधले हइ मौन,
आंदोलन मे मरइत हइ किसान।
देस के लाल, लाल बहादुर शास्त्री।
आइ लोग उठवइत हइ प्रसन?
लाल बहादुर आ गांधी मे, के हइ महान?
जबाब दा लाल बहादुर, के हइ महान?
हम छी पहन ले गांधी टोपी,
लोग के न बुझाई हइ, के हइ महान।
रामा हम त शिस्य छी, गांधी महान्,
देस के लाल, लाल बहादुर शास्त्री ।

■■■

३०. || शहीद रामफल मंडल ||

हो बाबा शहीद रामफल मंडल,
शहीद हो गेला देसक लेल,
देस भारत आजाद हो गेल,
हो बाबा शहीद रामफल मंडल।
तू मार ल अंगरेजी दलाल,
जे रहे आजादी के खल,
हो बाबा शहीद रामफल मंडल।
तोरा पकड़वा देलक दलाल,
तोरा भेलो न एकर मलाल,
हो बाबा शहीद रामफल मंडल।
मामला अदालत मे चलल,
वकील कहलन आप झूठ बोल,
हो बाबा शहीद रामफल मंडल।
हम फांसी पर जायब झूल,
हम झूठ न बोलब बोल,
हो बाबा शहीद रामफल मंडल।
हमही मारली अंगरेजी दलाल,
फांसी हो गेल देसक लाल,
हो बाबा शहीद रामफल मंडल।
तू हो गेला अमर शहीद लाल,
हो रामा शहीद रामफल मंडल,
हो बाबा शहीद रामफल मंडल ।

■■■

३१. || मिथिला ||

सुगौली संधि मे
कट गइल मिथिला।
जे बनइल नेपाली मिथिला
आ भारतीय मिथिला।

नेपाल मे बनल
नाम परांत नं दू ।

लड़ाई भेल नया नाउ के
नाउ मिथिला आ मधेश के।

लड़ाई भेल भासा के
मैथिली आ बज्जिका मे।

रार भेल मानक रार मे
रार भेल परजा राज मे।

रार भेल लोकभासा बर्चस्वभासा मे
रार भेल मधेश मिथिला मे

विजय मिल गेल मधेश के
रामा सीख लूं भारत मिथिला के।

■■■

३२. || मिथिला महातम ||

केहन हमर मिथिला रहए!
दादा हमर जमींदार रहए!!
केहन हमर मिथिला रहए!
बड़का घर लोरिन रहए!

केहन हमर मिथिला रहए!
बड़का घर खवास रहए!!
केहन हमर मिथिला रहए!
बड़का घर खवासिन रहए!!

केहन हमर मिथिला रहए!
दूरा पर हजामत बनए!!
केहन हमर मिथिला रहए!
दूरा घोड़ा हाथी रहए!!

केहन हमर मिथिला रहए!
हजारओ बीघा खेत रहए!!
केहन हमर मिथिला रहए।
बैल आ हरवाह रहए!!

केहन हमर मिथिला रहए!
डोली आ कहार रहए!!
केहन हमर मिथिला रहए!
पान आ पिकदान रहए !!

केहन हमर मिथिला रहए!
चालू पैखाना सफाईवला रहए!!
केहन हमर मिथिला रहए!
बाभन आ सोलकन रहए!!

केहन हमर मिथिला रहए!
हमर मिथिला राज रहए!!
केहन मिथिला राज रहए!
दरबारी कवि गान रहए!!

केहन मिथिला राज रहए!
अपन दंड विधान रहए!!
केहन मिथिला राज रहए!
रामा मिथिला महातम रहए!!

■■■

३३. || मिथिला मे की छइ ? ||

मिथिला मे की छइ ?
मिथिला मे सीता छइ!
सीताक जनम असथान छइ !
मिथिला मे की छइ ?
मिथिला मे नदी आ पोखर छइ !
पान माछ आ मखान छइ !

मिथिला मे की छइ ?
मिथिला मे दरभंगा राज छइ !
लाल लाल मकान छइ !
मिथिला मे की छइ ?
मिथिला मे राजकवि विद्यापति छइ !
राज घराना के गान छइ!

मिथिला मे की छइ?
मिथिला मे मांगैन खवास छइ!
पचगछिया घराना के राग छइ!
मिथिला मे की छइ?
मिथिला मे भारती आ मंडन छइ!
सुग्गा पढईत पुरान छइ!

मिथिला मे की छइ?
मिथिला मे अयाची छइ!
परसौत कलियानी माय महान छइ!
मिथिला मे की छइ?
मिथिला मे रेनु साहितकार छइ!

रचना मे माटी के सौंध छइ!

मिथिला मे शहीद रामफल मंडल छइ!

देस लेल शहादत महान् छइ !

मिथिला मे की छइ ?

मिथिला मे पाग छइ !

पगड़ी छइ !

मिथिला मे की छइ ?

मिथिला के शान छइ !

रामा मिथिला महान छइ !

■■■

३४. || मिथिला हमर महान ||

मिथिला हमर महान हो,
सलहेस हमर महान हो।
राजा बनल महान हो,
मिथिला हमर महान हो।
लोरिक वीर महान हो,
बंठा वीर महान हो।
मिथिला हमर महान हो,
मांगन राग महान हो।
रेनु कवि लेखक महान हो,
मिथिला हमर महान हो।
करांतिकारी रेनु महान हो,
पदम श्री तियागी महान हो।
मिथिला हमर महान हो,
शहीद रामफल महान हो।
फांसी पर चढलन महान हो,
मिथिला हमर महान हो।
शहीद पूरन मथुरा महान हो,
देसक लेल कुर्बानी महान हो।
मिथिला हमर महान हो,
अनूप लेखक महान हो।
करपूरी जन नायक महान हो,
मिथिला हमर महान हो।
नेता रामविलास महान हो,
भोला पासवान महान हो।
मिथिला हमर महान हो,

मिथिला हमर महान हो,
विन्देसरी मंडल महान हो।
आरछन रिपोर्ट महान हो,
मिथिला हमर महान हो।
मिथिला नायक महान हो।
रामा मिथिला हमर महान हो।

■■■

३५. || मिथिला राज्य हमर महान ||

मिथिला राज हमर महान।
बनल राजा कृसक महान।
नाम उनकर जनक महान।
भूमिजा सीता छइथ महान।
रामक सासुर मिथिला महान।

ऐतिहासिक राजा सलहेस महान।
वीर लोरिक कएं गुंजए गान।
विद्यापति कवि भेलन महान।
मांगैन राग कएं गुंजए तान।
मंडन सूग्गा गावए पुरान।

अयाची करइ दरसन कएं गान।
परसौत कलियानी माय महान।
स्वातंत्र्य शहीद रामफल महान।
दिनकर करइ देस कएं गान।
रेनु करइ माटी कएं गुनगान।

ललित बाबू मैथिल महान।
मिथिला भरल धान आ पान।
पोखरि भरल माछ आ मखान।
मिथिला भरल विद्या आ विद्यमान।
मिथिला गुंजइ गीत आ गान।

उत्तर हिमगिरि, गंग दखिन।
पुरब कोशी, पछिम गंडक नारायन।
मैथिली भासा, मैथिली बोलन।
मिठगर भासा, मिठगर बोलन।
मैथिल कएं हइ पहिचान।

सुगौली संधि मे कट गल मिथिलान।
कुछ कट गेलन झारखंड।
शेस हइ एक्कइस जिला महान।
बाढ मे डूबल खेत खरिहान।
सभ मिल बंद नइ मिलइ निदान।

नइ हइ कउनो परजटन कएं पिलान।
मैथिल बचबइत हइ केहुना परान।
नइ छइ विकास, नइ मिलइ समाधान।
मिथिला होइ गइल अब निसपरान।
तएं राज्य बनइ त लौटत परान।

बिगुल फूइक दू, राज्य लेल मांग।
जेना भेलइ मैथिली संविधानक अंग।
सभ बोली बन जायत भासाक अंग।
खूब खिलत-फूलत मिथिला महान।
मिली के गाउ मिथिला कएं गान।
रामा मिथिला राज्य हमर महान।

■■■

३६. || मिथिला राज ||

हमरा मिथिला राज चाही,
राजा रानी के गुनगान चाही।
हमरा मिथिला राज चाही,
दरभंगा वला राज चाही।

हमरा मिथिला राज चाही,
भेदभाव के राज चाही।
हमरा मिथिला राज चाही,
ऊँच-नीच के राज चाही।

हमरा मिथिला राज चाही,
छूत अछूत के राज चाही।
हमरा मिथिला राज चाही,
बाभन सोलकन वलाराज चाही।

हमरा मिथिला राज चाही,
घिरना के संसकृति चाही।
हमरा मिथिला राज चाही,
मंतर - तंतर के ढोंग चाही।

हमरा मिथिला राज चाही,
भगता - भगती के राज चाही।
हमरा मिथिला राज चाही,
अंधभकती के राज चाही।

हमरा मिथिला राज चाही,
ढोंग पाखंड के राज चाही।
विसमता के नियाय बेबसथा चाही।
हमरा मिथिला राज चाही,

छुआछूत के जाति बेबसथा चाही।
हमरा मिथिला राज चाही,
मनु बाबा के संविधान चाही ।
रामा मिथिला राज चाही ।

■■■

३७. || मिथिला राज बना दा ||

हो बाबा!
मिथिला राज बना दा,
तोरा के पूजा करब ना।

हो बाबा!
मिथिला राज बना दा,
तीन कठिया लागू करब ना।

हो बाबा!
तीन कट्ठा मे भांग उपजायब ना,
चाहे गांजा उपजायब ना।

हो बाबा!
भांग गांजा पी के,
तोहर महाभकत कहायब ना।

हो बाबा!
हम मैथिल के राजनीति करब ना,
हम सूच्चे मैथिली बोलब ना।

हो बाबा!
हम मैथिली साहित लिखब ना,
हम तोहर लीला लिखब ना।

हो बाबा
मिथिला राज बना दा,
रामा हम राज करब ना। ■■■

३८. || बियाकुल मोरा जियरा ||

मिथिला राज लेल, बियाकुल मोर जियरा,
मिथिला राज लेल, पिआसल मोर हियरा।
मिथिला राज लेल, भूखल मोर मनवां,
मैथिली भासा सं, अघायल मोर जियरा।
मैथिली सनमान सं, अघायल मोर हियरा,
मैथिली पाग मे, समायल मोर मनवां।
बज्जिका भासा स डराय मोर जियरा,
अंगिका भासा स घबराय मोर हियरा।
बोली माने मे हुलसाय मोर मनवां,
मिथिला राज लेल बियाकुल मोर जियरा।

■■■

३९. || हम्मर सुनू ||

अहां के सुनली, हम्मर सुनू।

अहां के मान ली, हम्मर मानू।

अहां के जनली, हम्मर जानू।

अहां के पढली, हम्मर पढू।

अहां के पूजली, हम्मर पूजू।

अहां के गइली, हम्मर गाउ।

रामा अहां सुनइली, हम्मर सुनू ।

■■■

४०. || नायक छी हम ||

खलनायक नइ,
नायक छी हम।
मूकक नायक छी हम।
नेपथक नायक छी हम।
खलनायक नइ,
बंचित लोकन कएं,
आवाज छी हम।
कबीर छी हम,
गलत कएं बिरोधी छी हम।
खलनायक नइ,
बुद्ध छी हम।
शलहेस, लोरिक, रेनु, रामफल के
वंशज छी हम।
मांगैन राग कएं,
गायक छी हम।
खलनायक नइ,
सीताक भाई छी हम।
मिथिलाक खबरदार छी हम।
मिथिलाक पहरेदार छी हम।
खलनायक नइ,
नायक छी हम।
सुतल मैथिल के,
जगाबे वला हम।
सुच्चा मैथिल छी हम।
खलनायक नइ,
रामा नायक छी हम। ■■■

४१. || हम मिथिला छी ||

हम मिथिला छी,
कृसक जनक कएं मिथिला छी।
हम बेटी सीता कएं मिथिला छी,

हम मिथिला छी।
बेटा सलहेस कएं मिथिला छी,
हम वीर लोरिक कएं मिथिला छी।

हम मिथिला छी।
साहितकार रेनु कएं मिथिला छी,
रासट्र कवि दिनकर कएं मिथिला छी।

हम मिथिला छी।
शहीद रामफल कएं मिथिला छी,
हम शहीद जुब्बा कएं मिथिला छी।

हम मैथिली छी।
जन जन कएं बोली मैथिली छी,
जन जन कएं भासा मैथिली छी।

हम मैथिली छी।
मांगैन कएं गान मैथिली छी,
पोथी कएं भासा मैथिली छी।

हम मैथिली छी।
मैथिल कएं मायक भासा मैथिली छी,
मिथिला कएं मिठगर बोली मैथिली छी।

हम मैथिली छी।
संवैधानिक भासा मैथिली छी,
मिथिला मैथिल कएं भासा मैथिली छी।
हम मैथिल छी।

हम मैथिल छी।
मिथिला कएं रहनि हार मैथिल छी,
मिथिला मे जनमल मैथिल छी।
रामा हम सुच्चा मैथिल छी।

■■■

४२. || मिथिला कएं संसकृति ||

एकटा संसकृति नइ छइ,
मिथिला कएं संसकृति मे।
जनक कएं विदेहता,
सीता कएं धीरता,
सलहेस कएं वीरता समाइल छइ,
मिथिला कएं संसकृति मे।

बुद्ध कएं गियान,
कबीर कएं भक्ति,
तीर्थंकर कएं बैराग समाइल छइ,
मिथिला कएं संसकृति मे।

विद्यापति कएं गीत,
मांगैन कएं राग,
रेनु साहित कएं सौंध समाइल छइ,
मिथिला कएं संसकृति मे।

रामफल कएं बलिदान,
दिनकर कएं ओजस्व,
अम्बेडकर कएं संविधान समाइल छइ,
मिथिला कएं संसकृति मे।

हिन्दू कएं पुरान,
इसलाम कएं कुरान,
मुसलमान कएं अजान समाइल छइ,

मिथिला कएं संसकृति मे।

मिथिला कएं संसकृति,
एकटा संसकृति नइ,
मिथिला कएं संसकृति मे,
बहुलवादी संसकृति छइ,
समावेशी संसकृति समाइल छइ,
रामा मिथिला कएं संसकृति मे।

■■■

४३. || मैथिल सभा ||

पाग मैथिल पहिचान।

पाग मैथिल सनमान।

पाग मैथिल अभिमान।

हम सभ मैथिल छी।

मैथिली हम सभ भासा।

सभ बोली मैथिली भासा।

सभक मिथिला राज्य आशा।

हम सभ मैथिल छी।

चलू विचारे मैथिल सभा।

सभक संसकृति के आभा।

बंद सभ के मैथिल सभा।

शूरू अपन मैथिल सभा।

शक्ति अपन मैथिल सभा।

हम सभ मैथिल छी।

■■■

४४. || अधलाह संसकृति ||

गरब नइ शरम अबइ, मिथिला के संसकृति पर!
केते जातिवादी वो हइ , केवल सोचइ अपना पर!

हमर विरोध आपैत नइ , विद्यापति मंडन अयाची पर!
हमर विरोध आपैत हइ , सलहेश लोरिक उपेछा पर !

हमर विरोध आपैत हइ , मांगैन रेनु उपेछा पर !
हमर विरोध आपैत हइ , शहीद रामफल उपेछा पर !

धनहमर विरोध आपैत हइ , किराय करपूरी उपेछा पर !
हमर विरोध आपैत हइ , भोला धनिक उपेछा पर !

हमर विरोध आपैत हइ , मंगनी विलास उपेछा पर !
हमर विरोध आपैत हइ , ऊँच नीचक भाव पर !

हमर विरोध आपैत हइ , बाभन सोलकन सोच पर !
हमर विरोध आपैत हइ , रामा अधलाह संसकृति पर!

■■■

४५. || भगवान के जाति ||

बरम्हा बिसनु महेश के
कोइ जाति नइ ।

इन्दर वरुन पवन के
कोइ जाति नइ ।

अगनी सूरुज चान के
कोइ जाति नइ ।

जमराज विसकर्मा गनेस के
कोइ जाति नइ ।

राम किरसन परशुराम के
कोइ जाति हइ।

ईश्वर देओ सुर के
कोइ जाति नइ ।

भगवान मनुस अवतारी के
कोइ जाति हइ।

अपन हर जाति के
कोइ भगवान हइ।

जइ जाति के भगवान नइ
रामा वो कंगाल हइ।

■■■

४६. || अप्पन राज चाही ||

हम सभ मैथिल छी ।
सभक देवी मैथिली छी।
सभक भासा मैथिली छी।
सभक बोली मैथिली छी।
हम सभ मैथिल छी ।
हमरा मिथिला राज्य चाही।
हमारा मिथिला राज चाही।
हमरा दरभंगा राज चाही।
हमरा अप्पन राज चाही।
हम सभ मैथिल छी ।

■■■

४७. || धुत बुड़बक ||

हम सभ मैथिल छी।
धुत बुड़बक !
तू सोलकन हम बाभन छी।
हम सभ मैथिली भाषी छी।
धुत बुड़बक !
तू बज्जकी अंगकी, हम मानकी छी।
हम सभ एके छी।
धुत बुड़बक !
तू श्रमजीवी, हम बुद्धिजीवी छी।
हम सभ मैथिल छी।

■■■

४८. || **जातीय बोध** ||

चारि वरन आ
हजारओ जाति के
रचए वला
आइ जातिय बोध से
घबराइल हैय।

'सतपथ बराम्हन '
चतुरी चमार
सतिया धनुकाइन
रचए वला
आइ जातिय बोध से
घबराइल हैय।

अंतरराष्ट्रीय
जातिय संगठन बनाबई बाला
प्रांतीय
जातिय संगठन वला
आइ जातिय बोध से
घबराइल हैय।

सबस पहिले
जातिय संगठन बनाबई बाला
आइ
जातिय संगठन बनाबई वला
आइ जातिय बोध से
घबरायल हैय।

सबस पहिले
जातिय पतरिका निकालई वला
आइ के
जातिय पतरिका निकालई वला
आइ जातिय बोध से
घबराइल हैय।

जातिय
बेबहार कायम रहए
परंच
जातिय बोध न रहए
आइ जातिय बोध से
घबराइ ल हैय।

जाति
कायम रखे वला
जाति
भंजन करइ वला
रामा जातिय बोध से
घबराइल हैय।
■■■

४९. || झाझा मेल ||

झाझा मेल
मिथिला राज के लेल,
झाझा मेल खुलइत हइ।
जय काली कलकत्ते वाली,
छुक छुक कर के बोलइ हइ।
कुछ पिछलगुआ खलासी बइनके,
बज्जिका अंगिका के,
कोयला पानी झोंकइत हइ।
मैथिली बन के भाप,
झाझा मेल के चलबइत हइ।
झाझा मेल बिन पसिंजर के,
दरभंगा राजक टीसन अबइत हइ।
मैथिल सभ टीसन पर,
झाझा मेल के राह जोहइत हइ।
मिथिला राज के लेल,
रामा झाझा मेल आबइत हइ।

■■■

५०. || अहा ! आह ! ||

अहा! करई छी,
त आह! भी करिऔ।
गरव करई छी,
त शरमो करिऔ।
काज नइ चलत,
कि पुरखा अइछ कएलएं।

नीच बना कएं,
ऊँच नइ बनिऔ।
अनपढ़ बना कएं,
विदमान नइ बनिऔ।
काज नइ चलत,
कि पुरखा अइछ कएलएं।

गरीब बना कएं,
धनिक नइ बनिऔ।
अछोप बना कएं,
पवितर नइ बनिऔ।
काज न चलत,
कि पुरखा अइछ कएलएं।

गरब करई छी,
त शरमो करिऔ।
समान सभ लइ छी,
त पानी नइ छिटिऔ।
गलती करई छी,

तो गलानी त मानिऔ।
अहा! करई छी,
त रामा़ आह! भी करिऔ।
गरब करई छी,
त शरमो करिऔ।
अहा! करई छी,
त रामा़ आह! भी करिऔ ।

■■■

५१. || मनु आ द्रोन ||

मिथिला मे रजस अभी जिंदा हैय ।
मिथिला मे तमस अभी जिंदा हैय ।
मैथिल मे बाभन अभी जिंदा हैय ।
मैथिल मे सोलकन अभी जिंदा हैय ।
मैथिली मे मनु अभी जिंदा हैय ।
मैथिली मे द्रोन अभी जिंदा हैय ।

■■■

५२. || जातिवाद ||

मनु के बात करनाई,
इ जातिवाद नइ।
सवरन अवरन के बात करनाइ,
इ जातिवाद नइ।
ऊँच नीचक बात करनाइ,
इ जातिवाद नइ।
वरन बेबसथा के बात करनाइ,
इ जातिवाद नइ।
बाभन सोलकनक बात करनाइ,
इ जातिवाद नइ।
अगड़ा-पिछड़ाक बात करनाइ,
इ जातिवाद छइ।
समता के बात करनाइ,
इ जातिवाद छइ।
आरछन के बात करनाइ,
इ जातिवाद छइ।
जनगनना के बात करनाइ,
इ जातिवाद छइ।
मानवता के बात करनाइ,
इ जातिवाद छइ।
संविधान के बात करनाइ,
इ जातिवाद छइ।
अम्बेडकर के बात करनाइ,
इ जातिवाद छइ।
मनु के बात करनाइ,
इ रामा जातिवाद नइ।

■■■

५३. || दरद ||

हमरा दरद हैय,
छूत - अछूत से।

हमरा दरद हैय,
ऊँच -नीच से।

हमरा दरद हैय,
वरन बेबस्था से।

हमरा दरद हैय,
जाति बेबस्था से।

हमरा दरद हैय,
बाभन सोलकन से।

हमरा दरद हैय,
बाभन वाद से।

हमरा दरद हैय,
धरम पाखंड से।

हमरा दरद नइ हैय,
रामा हिन्दू धरम से।

■■■

५४. || समाज भइल निसपरान ||

संसकृत मे लिखाइ अ शथपथ बराम्हन!
हिन्दी मे लिखाइ अ चतुरी चमार !१!

मैथिली मे लिखाइ अ सतिया धनुकाइन !
लिखेवला छइथ बर्चस्ववादी रचनाकार गन !२!

बर्चस्वबादी के सनमान दलित के अपमान !
सभ ग्रंथन मे हैय बर्चस्ववादी के गुनगान! ३!

दलित - उपेछित के हैय कइलन अपमान!
दलित उपेछित कर जोरि के करइत प्रभुगान !४!

तएं वे दलित उपेछित के करइत हैय गुनगान!
आइयो समाज मे पूजल जाइ विभेदक गन !५!

आ पूछल जाइ अ पिछलगुआ चाटुकार गन!
रामा आइओ समाज बंटके भइल निसपरान !६!

■■■

५५. || दान ||

बिसनु बामन बनके,
बलि से दान लए के,
बलि के कंगाल बनलकइ।

बिसमामितर दान लए के,
हरिसचनदर के,
परिवार सहित बिकबा देलकइ।

इनर दान लए के ,
करन के,
अरजून से मरबलकइ।

दधिचि हड्डी दान दए के,
वितरा सुर के,
इनर से मरबलकइ।

दान लए के,
दान दए के,
मानवता के मर बलकइ।

दान लए के,
दान दए के,
दान के छल कपट बनलकइ।

आइओ दान लए के,
अपन तिजोरी भरलकइ,
लोग के मानसिक गुलाम बनलकइ।

■■■

५६. || कएरैक्टर ढ़ीला ||

जे काल्हि होइत रहइ,
आइ भी होइये।
फरक इ जे,
काल्हि ठीक रहइ।
आइ ठीक न हबइ।
हमर विसनु सरोजिनी से,
बलतकार कइलन।
साला के मार के,
सरोजिनी से बिआह कइलन ।
आइ ओ एगो कुलिन,
घरवाली के छोड़ के,
सरोजिनी से बिआह कइलन।

उ त डंका के चोट पर कहलन।
उ कइलन त रासलीला,
हम कइली त कएरैक्टर ढीला।
हमर इनर गौतम के ,
कनिया से बलतकार कइलन।
गवाही न देलन,
त चनरमा मार खइलन।
करिया दाग लगा के,
चौठी चान बनलन।
उ कइलन त रासलीला।
रामा हम कइली त कएरैक्टर ढीला ।

■■■

५७. || भकतन के पहरा ||

राम के मंडिल,
समझ मे आवैय।
वो अवतार हइ।
वो परोछ हइ।
किरसन के मंडिल,
समझ मे आवइय।
वो अवतार हइ।
वो परोछ हइ।
सूरुज के मंडिल,
समझ मे नइ आवइय।
वो परकीरति हइ।
वो प्रत्यछ हइ।
पृथवी के मंडिल।
समझ मे नइ आवइ।
वो परकीरति हइ।
वो प्रत्यछ हइ।
ईश्वर के मंडिल।
समझ मे नइ आवइय।
वो निराकार हइ।
मंडिल त एगो जहल हइ।
जइ पर पुजारी के पहरा हइ।
जइ पर पुलिस के पहरा हइ।
रामा जइ पर भकतन के पहरा हइ।

■■■

५८. || धरम - १ ||

धरम भी अजूबा हैय!
शक्ति के पूजा हैय,
शाक्त के आराधना हैय।

धरम भी अजूबा हैय!
संत के विरागना हैय,
गृहथ के करमना हैय।

धरम भी अजूबा हैय!
संन्यासी के न्यासना हैय,
डाकू के डाकना हैय।

धरम भी अजूबा हैय!
नेता के किरसन हैय,
परजा के मंतना हैय।

धरम भी अजूबा हैय !
सत रज तम के आवाहना हैय,
रामा कोई नइ बचना हैय।

■■■

५९. || धरम ||

धरम सराप आ वरदान छइ !
धरम परेम घिरना के कहान छइ!१!

धरम सत असत के घमासान छइ !
धरम ऊँच नीच के मचान छइ !२!

धरम जातिवाद के खजान छइ !
धरम धनार्जन के व्यापारन छइ !३!

धरम शासन के कारन छइ !
धरम राजनीति के विज्ञान छइ !४!

धरम समाज के विज्ञान छइ!
धरम रामा मन के विज्ञान छइ !५!

■■■

६०. || धरमी ||

मनुस जनम से मनुस रहइ हैय।
शिखा रख के हिन्दूधरमी बनइ हैय ।।

मनुस जनम से मनुस रहइ हैय।
सुन्नत कर के इसलामधरमी बनइ हैय ।।

मनुस जनम से मनुस रहइ हैय।
केस किरपान कड़ा कंघा से सिखधरमी बनइ हैय ।।

मनुस जनम से मनुस रहइ हैय।
क्रास पहिन के ईसाईधरमी बनइ हैय ।।

मनुस जनम से मनुस रहइ हैय।
रामा हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई धरमी बनइ हैय ।।

■■■

६१. || हिन्दू ||

आइ हिन्दू केते डरल हैय।
जेना औरेंगजेब के शासन हैय।

जेना आइ हम हिन्दू हैय।
जेना पहिले हिन्दू न रहई।

जेना बाद हिंदू न रहबई।
जेना औरेंगजेब अब आवई हैय।

हम हिन्दू रहली हिन्दू रहबई।
रे तू वोटवा औरेंगजेब हैय।

रे औरेंगजेब अब न डरबई।
औरेंगजेब तू जयबे रामा हिन्दू रहबई।

■■■

६२. || मनुस बंटल ||

धरम से देस बंटल।
हिन्दूस्तान आ पाकिस्तान बनल ।।

भासा से राज्य बंटल।
बंगाल आ बिहार बनल ।।

जाति से समाज बंटल।
बाभन आ सोलकन बनल ।।

धरम से मनुख बंटल।
हिन्दू आ मुसलमान बनल ।।

भासा से मनुख बंटल।
बंगाली आ असमिया बनल ।।

जाति से मनुख बंटल।
ऊँच -नीच के जात बनल ।।

जड़ मे धरम रहल।
सभ्यता आ संसकृति बटल ।।

मनुख विचार मे बंटल।
रामा तएं मनुख बंटल ।।

■■■

६३. || झकझोरइय हैय! ||

कुछ बात मन के
झकझोरइय हैय!
भगवान कोई वरन के
झकझोरइय हैय!

बेटा राम दशरथ के
झकझोरइय हैय!
बेटी सीता धरती के
झकझोरइय हैय!

बेटा मंगल धरती के
झकझोरइय हैय!
भगवान खास वरन के
मन झोरइय हैय!

संतान सभ धरती के
बुझनइ झोरइय हैय!
कोना भगवान सभ वरन के
बुझनइ झोरइय हैय!

सगुन खास वरन के
बुझना अबइ हैय!
निरगुन सभ वरन के
रामा बुझना अबइ हैय!

■■■

६४. || कोयल आ काग ||

कोयल कारी बोलइ मीठा।
काग कारी बोलइ खारा।
कोयल कुहुकइ विरही विथा।
काग बोली विरही संदेशा।

कोयल कारी बड़ा चातुरा।
काग कारी बडा चेष्टना।
काग रुप बड़ा भाग्यवाना।
खेलत राम बड़ा बचकाना।

काग भुसुंडी बनइ कागा।
गियान देत मानव कएं कागा।
परेमी करई त प्रार्थना कागा।
दू नयन नइ खाइयो कागा।

शुभ अशुभ संवदिया कागा।
दुध भात खिलावइ जनाना।
परकीरति साफ करई कागा।
किरसक के सहयोगी कागा।

अंतिम किरिया पूरनाहुति कागा।
दोसर जनम करावइ कागा।
मीठा सएं निक बोली खारा।
रामा कोयल सएं निक कारी कागा।

■■■

६५. || इ धरती छई ||

शान मे छी,
गुमान मे छी।
गुलामी कएं,
गुनगान गवई छी।
राजा महाराजा कएं,
महिमा कएं,
बखान करई छी।
हम कवि छी।
राजा रानी कएं,
नख शिख वरनन,
करई छी।
कभी राधा किरसन,
त कभी गौरी शंकर,
बनबई छी।
कभी बईसनब,
कभी सईब,
त कभी साक्त बनइ छी।
गाजा भांग मांस माछ कएं
बखान करई छी।
ऊँच-नीच कएं,
भाव रखई छी।
मिथिला मैथिली,
आ मैथिल कएं,
राजनीति करई छी।
हिंदी नइ,

कह के भारत कएं,
कमजोर करई छी।
मिथिला कएं,
बहु संसकृति कएं,
नास करई छी।
इ धरती छई,
जनक, बुद्ध आ,
कबीर कएं गियान के।
इ धरती छई,
सीता आ चनमा कएं,
परेम कएं।
इ धरती छई,
सलहेस लोरिक,
आ बंठा वीर चमार कएं।
इ धरती छई,
मांगैन, रेनु रामफल,
आ दिनकर कएं।
रामा इ धरती छई,
सभ मैथिल के।

■■■

६६. || हो मैथिल ||

भांग पिउ हो मैथिल,
गांजा पिउ हो।
नचारी गाउ हो मैथिल,
चरस पिउ हो।
मांस खाउ हो मैथिल,
मछली खाउ हो।
दारु पिउ हो मैथिल,
काली पूजू हो।
मखान खाउ हो मैथिल,
पान खाउ हो।
पाग पहनू हो मैथिल,
दुपट्टा रखू हो।
मैथिली अलापू हो मैथिल,
मिथिला राज मांगु हो।
भांग पिउ हो मैथिल,
रामा नचारी गाउ हो ।

■■■

६७. || हो बाबा ||

हो बाबा।
गुरु देओ महेश्वर छअ।
केना भांग पियइ छअ।
केना गांजा पियइ छअ।
हो बाबा।

केना बौआइत रहल छअ।
केना पगलायल रहल छअ।
केना आंखि लाल रहल छअ।
हो बाबा।

केना शिष्य सं खुश रहल छअ।
जई शिष्यक वामा कनइत छअ।
जई शिष्यक बुतरु बौआइत छअ।
हो बाबा।

जई शिष्यक माइक लोर बहइत छअ।
जई शिष्यक बाप कपार पीटइत छअ।
हो रामा।

इ शिष्य हमरा बदनाम करइ छअ।
जेकर जेहन भावना छअ।
वहिना हमर रुप देखइ छअ।
हो बाबा।

■■■

६८. || गुलाम ||

गुलाम
हम कइसे गुलाम छी !
कहियो हम मुगल के गुलाम छी।
कहियो हम अंग्रेज के गुलाम छी।
कहियो हम राजा के गुलाम छी।

हम कइसे गुलाम छी।
आइयो हम नेता के गुलाम छी।
आइयो हम पार्टी के गुलाम छी।
आइयो हम राजनीति के गुलाम छी।

हम कइसे गुलाम छी।
आइयो हम जाति के गुलाम छी।
आइयो हम समाज के गुलाम छी।
आइयो हम अर्थ के गुलाम छी।

हम कइसे गुलाम छी।
आइयो हम धरम के गुलाम छी।
आइयो हम राजवंशी भगवान के गुलाम छी।
आइयो रामा हम राजा के गुलाम छी।

■■■

६९. || खवास ||

खवास छी,
राजाक खवास छी।
राजा छी,
राजक खवास छी।

साधु संत छी,
ईश्वरक खवास छी।
हनुमान छी,
रामक खवास छी।

संत तुलसी छी,
रामक खवास छी।
उगना महादेव छी,
विद्यापतिक खवास छी।
खवास छी।

■■■

७०. || केवल मानव ||

मानइ छी ईश्वर
विभिन परानी बनइलई हैय।
सुग्गा मइना कऊआ
विभिन रुप बनइलई हैय।
गाय भइंस बकरी
विभिन रुप बनइलई हैय।
मानव जानवर चिड़िया
विभिन रुप बनइलई हैय।
जलचर थलचर नभचर
विभिन रुप बनइलई हैय।
सुग्गा मइना कौआ
देखतए पहिचानई हैय।
गाय भइंस बकरी
देखतए पहिचानई हैय
मानव जानवर चिड़िया
देखतए पहिचानई हैय।
जलचर थलचर नभचर
देखतए पहिचानई हैय।
बाभन छत्रिय सोलकन
देखतए नइ पहिचानई हैय।
बाभन छत्रिय सोलकन
देखतए मानव लागई हैय।
जानइय छी ईश्वर
रामा केवल मानव बनइलई हैय।

■■■

७१. || विधवा ||

वो विधवा हइ
वो युवती हइ।
मन मे हुलस हइ,
सिंगार करइ के।
गले मे हार पहिनइ के,
गोड़ मे पाजेब पहिनइ के।
हाथों मे मेहदी रचावइ के,
गोड़ मे महाबर लगावइ के।
वो विधवा हइ,
वो युवती हइ।
देह मे कामना हइ,
मन मे भावना हइ।
युवक से पियार करइ के,
मनक बात इजहार करइ के।
समाज के बंदी तोइड़ के,
नया पैगाम देवइ के।
रामा नया पैगाम देवइ।

■■■

७२. || नारी तू के छे? ||

नारी तू के छे?

तू सनमान छे!

तू अपमान छे!

नारी तू के छे?

तू मां छे !

तू पतनी छे !

नारी तू के छे?

नारी तू बहन छे!

नारी तू बेटी छे !

नारी तू के छे?

नारी तू सृजना छे!

नारी तू भोग्या छे!

नारी तू के छे?

नारी तू देवी छे!

नारी तू राछसी छे!

नारी तू के छे?

नारी तू धरम छे!

नारी तू अधरम छे!

नारी तू के छे!

नारी तू निर्मान छे!

नारी तू विध्वंस छे!

नारी तू के छे?

नारी हम मानवी छी ।

रामा हमरो भावना छी ।

७३. || दुसमन ||

दुसमन राछस होइ हैय,
दुसमन दैत होइ हैय,
दुसमन दानव होइ हैय।

दुसमन असत होइ हैय,
दुसमन अन्हार होइ हैय,
दुसमन पापी होइ हैय।

दुसमन महाविदवान होइ हैय,
दुसमन महापंडित होइ हैय,
दुसमन महाबली होइ हैय।

दुसमन रावन कहाइ हैय,
दुसमन हिरनकसिपु कहाइ हैय,
दुसमन कंस कहाइ हैय।

दुसमन के लडाई हैय,
दुसमन संसकृति के लड़ाई हैय,
रामा विचार के लड़ाई हैय।

■■■

७४. || नियाय रछक ||

नियाय रछक के
आइ कोई रछक नइ ।

नियाय रछक के
रछक भछक बन गेल ।

नियाय रछक के
आइ हो रहल हत्या।

नियाय रछक के
अपराधी बना रहल गरास।

नियायपालिका विधायिका मे
आइ हो रहल टक्कर।

नियायपालिका कार्यपालिका मे
आइ हो रहल टक्कर।

संविधान के संरछक
आइ हो रहल घायल।

लोकतंत्र के लोग
आइ हो रहल निराश ।

नियाय रछक के
रामा बचाउ परान सनमान।

■■■

७५. || बीतल बरस ||

कहइ छी
बरस त बीत गेलइ।
परंच हम बीत गइली हैय।

वोहिना जेना
फलां त मइर गइलइ।
समसान घाट से आबइ हैय।

सोचू न
बरख फेर आ गेलइ।
परंच बीतल समय नइ आबइ हैय।

सोचू न
फलां त मर गेलइ।
अब हमर बारी आबइ हैय।

सोचू न
घमंड मे हम जियइ।
उमैर बीतल जा रहल हैय।

सोचू न
सभ के पड़त जायइ।
राजा रंक बाभन सोलकन कएं।

सोचू न
सभ के पड़त जाइ।
रामा ज्ञानी अगियानी परानी कएं।■■■

७६. || नब बरस ||

नब बरस मंगलमय होयत
धनी आ पढल - लिखल के ।

नब बरस मंगलमय होयत
कहिया गरीब आ अनपढ के ?

नब बरस मंगलमय होयत
कहिया कबाड़ चूनइ वला के ?

नब बरस मंगलमय होयत
नेता, अफसर आ दलाल के ।

नब बरस मंगलमय होयत
कहिया किसान आ मजदूर के?

नब बरस मंगलमय होयत।
मांस - मदिरा पियइ वला के ।

नब बरस मंगलमय होयत
कहिया मूस खायइ वला के ?

नब बरस मंगलमय होयत
रामा जहिया जगायब अपना मन के ।

■■■

७७. || मन उलबुलाइल ||

आइ केना न केना,
मन उलबुलाइल लगइय।
एकांत, मलय, कृष्णा,
कारीगर, दिनेश, परार्थी,
नरेश, रत्नेश, संतोस याद आवइय।
मैथिली, बज्जिका,
भासा आ बोली अशांत करइय।
मिथिला आ मैथिल के,
मन मे अन्हर उठइय।
आइ केना न केना,
मन उलबुलाइल लगइय।
फेसबुक के दोस्त,
मन के राहत दइहइ।
फेसबुक के अमित्र,
हृदय मे बातक तीर घोपइय।
आइ केना न केना,
मन उलबुलाइल लागइय।
रामा मन के शांत करइय।

■■■

७८. || पंचायत चुनाव ||

बिहार मे पंचायत चुनाव होबइ हैय,
चुनाव त्रीस्तरीय होबइ हैय।
बेसी मुखिया कंडीडेट होबइ हैय,
घूस सभ से बेसी कमाइ होबइ हैय।
शिछक बहाली मे मालामाल होबइ हैय,
महिला मुखिया पति, मुखिया पति कहाबइ हैय।
जहिया स नल जल योजना आइल हैय,
बार्ड मेम्बर के भाव बढ गएलए हैय।
अहु मे बारा मारा-मारी होबइ हैय,
पंचायत समिति मेम्बर मे, धक्का-मुक्की होबइ हैय।
परखंड परमुख चुनाव मे, बोली से कमाय होबइ हैय,
चुनाव खरचा, शिछक बहाली मे निकालइ हैंय।
जिला पारसद, लेल धक्कामारी होबइ होय,
परिसद् अध्यछ, चुनाव मे खूब कमाई होबइ हैय।
परिसद् अध्यछके जिला योजना मे कमाई होबइ हैय,
सरपंच मे हल्का धक्का मुक्की होबइ हैय।
कचहरी पंच के, कोई न पूछइ हैय,
पंचायती राज के पंचायती सरकार कहइ हैय।
रामा बिहार मे पंचायत चुनाव होबइ हैय।

■■■

७९. || राज करई छी ||

नाभि कुंड मे,
बसइ हइ अमृतक संविधान।
हथियार हइ,
लोकतांत्रिक अधिकार।
शास्त्रक शस्त्र,
हो जाइहइ बेकाम।
धरमक बान,
नइ पावइ निदान।
परयोग करइ हइ,
जातक ऊँच-नीच के बान।
सोख लिइय हइ अमृतक संविधान।
मारे फूट नीति के वान,
हो जाइ छथि ,
सामाजिक रन छेत्र मे निसपरान।
हड़प लेइ हइ अधिकार।
रामा राज करई छी बिनु सरकार ।

■■■

८०. || भगतै ||

होउ!होउ!होउ!
आवाज स नींद खुल गएल रहए,
घड़ी राति के एगारह बजइबत रहए,
दूरा पर से आवाज अबइत रहए।

लोगन के भीड़ लागल रहए,
छोटका काका भगतै करइत रहए,
काका होउ होउ करइत रहए।

गोचरिया करताल बजाबइत रहए,
गोचरिया भजन गाबइत रहए,
दशै के सपतमी रात रहए।

काका होउ होउ करइ लागल,
ठूमईक ठूमईक के हंसे लागल,
देह पर चमर देवी आइल।

लोग सभ कहए लागल,
गोचरिया करताल बजाबए लागल,
गोचरिया भजन गावए लागल।

काका होउ होउ करइ लागल,
कुहुक कुहुक के रोबए लागल,
देह पर काका आइल।

लोग सभ कहए भगता के काका आइल,
गोचरिया करताल बजाबए लागल,

गोचरिया भजन गावए लागल ।

काका लम्बा जीह निकालए लागल।,
देह पर महरानी आइल,
लोग सभ कहे भगवती आइल ।

गोचरिया करताल बजाबए लागल,
गोचरिया भजन गावए लागल,
काका होउ होउ करए लागल।

काका लम्बा जीह निकालए लागल,
दूनू हाथ के धरती पर मारए लागल,
लोग सभ कहे भगता के माइ आइल।

गोचरिया करताल बजाबए लागल,
गोचरिया भजन गाबए लागल,
गरीब पुरखा याद भगतै मे करए लागल।

मिट्टी के पिंड मे पूजा करए लागल,
धनी पुरखा याद स्तुति मे करए लागल,
मिट्टी पत्थर के मूरती मे पूजा करए लागल।

काका होउ होउ करइत रहए,
गोचरिया करताल बजबइत रहए,
रामा गोचरिया भजन करइत रहए ।

■■■

८१. || **असहमति** ||

आइ कि होइ रहल हैय।
असहमति के अधिकार
छीनल जा रहल हैय।
आइ कि होइ रहल हैय ।
बोलई के अधिकार
छीनल जा रहल हैय।

आइ कि हो रहल हैय।
असहमति के अधिकार
देसद्रोह बन रहल हैय।
आइ कि हो रहल हैय।
अमीरी गरीबी के खाइ
बढल जा रहल हैय।

आइ कि हो रहल हैय।
बेरोज़गारी सुरसा के मुंह लेखा
बढल जा रहल हैय।
आइ कि हो रहल हैय।
मंहगाई दिन दुना राति चौगुना
बढल जा रहल हैय।

आइ कि हो रहल हैय।
सत्ता के लगभगुआ
देसभकत कहल जा रहल हैय।
आइ कि हो रहल हैय।
देसभक्ति के परिभासा
रामा नया बन रहल हैय। ■■■

८२. || मेघ ||

मेघ तोहर केतेक रूप ?
तुलसी के घोड़ा ,
कालिदास के दूत,
शास्त्री के नेता,
जे उपरे उपरे
पी जाइत छे !

मेघ तोहर केतेक रूप ?
मेघ छे कि बादल !
मेघ बईन के बरसईयत,
बादल बईन के गरजईत,
मोर के नचऔलए,
श्याम स वनसी बजबऔलए।

मेघ तोहर कतेक रूप ?
पागल परेमी तूं बईन के,
धरती के पिआसल देइख कए,
परबत जेना उरोजो के छूइ कए,
अपन बरसा बून्न से,
कएं दय छी,
धरती के सस्य सामला !
मेघ रामा कतेक रूप ?

■■■

८३. || कमाल के हैय ||

कमाल के हैय मिथिला!

कमाल के हैय परब!

कमाल के हैय जीतीया!

कमाल के हैय पूजन!

कमाल के हैय भोजन!

कमाल के मरूआक रोटी!

कमाल के मसलुआ मछरी!

कमाल के घिउराक पत्ता!

कमाल के दही चूरा मीठा!

कमाल के माइ के सहनाई!

कमाल के बच्चा के खनाई!

कमाल के नइ लागत नजर!

कमाल हो जायत अमर!

कमाल के हैय मिथिला!

रामा कमाल के हैय परब!

■■■

८४. || छठ ||

छठ
परकीरति से लगाव के परब हइ।
लोगन के आस्था के व्रत हइ।
समाज के एकजुटता के परब हइ।
गांव के पुर्नजीविता के परब हइ।

छठ
सूरुज आ जल के महत्ता के परब हइ।
सौर ऊरजा आ जल ऊरजा के परब हइ।
नदी आ तालाब के सौंदर्य के परब हइ।
विनाशकारी भूकंम्प से बचाबे लेल परब हइ।

छठ
आइ सूरुज के मूरती के पूजा हो रहल हइ।
खुलल अकास मे डुबते-उगते सूरुज के पूजा नइ।
बंद मंडिल मे सात गो घोड़ा स जुड़ल रथ पर सूरुज हइ।
भकत नइ, पुजारी सूरुज भगवान के पूजई हइ।

छठ
नदी आ तालाब के तट पर परब नइ।
भवन के छत पर पिलासटिक नाद मे पूजा हइ।
मतारी के अंचरा पर नटुआ के नाच नइ।
डीजे के धुन पर पाप आ डांस हइ।

छठ
आइ आस्था विसवास के परब नइ।

आइ अंध विसवास के मेला हइ।

आइ परकीरति के उपासना अराधना नइ,
आइ रामा सूरुज के केवल अंध पूजा हइ।

■■■

८५ || **छठ परब** ||

छठ परब
परकीरति परब हइ।
सूरुज के आराधना हइ।
छठ परब
नदी आ तालाब संग
सूरुज के आराधना हइ।
छठ परब
जल सूरुज के संबंध
बरखा चक्र बतबइ हइ।
छठ परब
मंतर पुजारी बिन
सूरुज के आराधना हइ।
छठ परब
सूरुज मंडिल मे
सूरुज के पूजा हइ।
छठ परब
परकीरति परब न
आराधना न पूजा हइ।
छठ परब
ठेकुआ भोग लागइय
प्रसादी मे छूत मानइय।
छठ परब
परकीरति परब के
रामा गरिमा बचनाइ हइ।

८६. || **झिझिया** ||

डगहर के झिझिया निमन न लगइय,
अनपढ़ गंवार गरीब नचइय ।१।

बिना साज बाज, बिना ताल नचइय,
डिबिया के तेल लेल पईसा मंगइय ।२।

डगहर के झिझिया मे भक्ति भाव रहई हैय,
शिछा के परसार से झिझिया खतम होय ।३।

फिलिम मंच के झिझिया निमन लगइय,
पढ़ल इलिट धनिक नचइय ।४।

साज बाज के संग, ताल पर नचइय,
डिबिया के तेल लेल निवेश होय ।५।

हौल के झिझिया मे नाच गाना रहे हैय,
शिछा के बेपार रामा, झिझिया मनोरंजन करइ हैय ।६।

■■■

८७. || परकास परब ||

हम परब के
अपना लेखा
बना लइ छियइ।

परकास परब के
धन के
परब बनाबइ छियइ।

सुअछता,
सुआसथ के
लेल जरूरी छियइ।

इ मन के
सफाई के
लेल परब छियइ।

इ मन के
उपर विजय के
लेल उतसओ छियइ।

आउ मन के
अंदर के
रामा दीप जलवइ छियइ।

■■■

कवि परिचय

नाम- आचार्य रामानंद मंडल
(सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक)
माता- चन्द्र देवी
पिता- स्व. राजेश्वर मंडल
पत्नी- प्रमिला देवी
जन्म तिथि- 01 जनवरी 1960

योग्यता- एम. एससी. (रसायन शास्त्र), एम. ए. (हिन्दी)
मैथिली-हिन्दी कविता आ कहानी लेखन,
सामाजिक चिंतन।

दायित्व: पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी।

प्रकाशित कृति: विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित कथा, कविता.

स्थायी पता: ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार,
जिला-सीतामढी, मिथिला (बिहार)/भारत.

वर्तमान पता: पिपरा सदन, मुरलियाचक वार्ड-04, सीतामढ़ी
पोस्ट-चकमहिला जिला- सीतामढी मिथिला
पिन-843302

मो नं: 9973641075

ईमेल: ramanandmandal001@gmail-com

ISBN
978-81-955504-7-0

MST PUBLICATION
मिथिला समाज ट्रस्ट

mithilasamajtrust@gmail.com
9911562859 7053886423
2nd Floor, Pl. No. 12, Kh.No. 122/5/1
Bramh Kumari Marg, Sant Nagar Delhi-84

मूल्य:- ₹125/-